ऋग्वेद का रचना काल

भारतीय दृष्टिकोष और परम्पराएँ वेदों को अनादि, नित्य, तथा ईश्वरकृत मानती हैं। भारतीय साहित्य के अनुसार सृष्टि के आदि में ईश्वर ने वेदों का ज्ञान अग्नि, वायु, सूर्य और अंगिरा को दिया था। उस ईश्वरीय ज्ञान का वेद मन्त्रों का ऋषियों ने दर्शन किया। जिन ऋषियों ने जिन मन्त्रों का दर्शन किया, वे उन मन्त्रों के ऋषि कहलाये। मनुस्मृति आदि प्रमाणों को उद्धृत करके ऋषि दयानन्द ने यह प्रमाणित किया कि सृष्टि की उत्पत्ति १९६०८५२९७६ वर्ष पूर्व हुई थी, अतः वेदों का आविर्भाव इतने वर्ष पहले हुआ था। परन्तु वर्तमान युग की ऐतिहासिक दृष्टि, जो विकासवाद पर विश्वास रखती है, इस भारतीय दृष्टिकोण को स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं है। वैदिक साहित्य का अध्ययन करनेवाले अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने ऋग्वेद को सबसे प्राचीन मानकर उसके समय को निर्धारित करने का निश्चय किया। इन विद्वानों का कथन है कि प्रत्यक्ष और सबल प्रमाणों के अभाव में ऋग्वेद की रचना के समय को ठीकठीक निर्धारित नहीं किया जा सकता, परन्तु उसका अनुमान अवश्य किया जा सकता है। हो सकता है कि उस अनुमान में कुछ शताब्दियों का अन्तर रह जाये। पाश्चात्य आलोचकों के अनुकरण में भारतीय आलोचकों ने भी वेदों की रचना के समय को निर्धारित करने का प्रयत्न किया और ये ऋग्वेद की रचना के समय को पाश्चात्य आलोचकों की अपेक्षा अधिक प्राचीन समय तक खींच कर ले गये।

मैक्समूलर का मत –

इंग्लैण्ड की "सेक्रेड बुम्स ऑफ दी ईस्ट" ग्रंथमाला के अन्तर्गत उसकी भूमिका में मैक्समूलर ने ऋग्वेद के समय को निर्धारित करने का प्रयत्न किया। इन्होंने ऋग्वेद की रचना को १२०० ई.पू. का सिद्ध किया। अपने मत को पुष्ट करने के लिये मैक्समूलर ने कहा कि गौतम बुद्ध के समय तक वैदिक साहित्य की रचना पूरी हो चुकी थी। वैदिक साहित्य को उन्होंने चार भागों छन्द, मन्त्र, ब्राह्मण और उपनिषद में विभाजित किया। सबसे पहले छन्दों, उसके बाद मन्त्रों, तदनन्तर ब्राह्मणों उसके पश्चात् सूत्रों की रचना हुई। मैक्समूलर के अनुसार प्रत्येक विभाग के विकास और उसकी पूर्णता के लिए २०० वर्षों का समय पर्याप्त है। गौतम बुद्ध का समय ५०० ई.पू. है। सूत्रग्रंथ बुद्ध के समय तक लिखे जा चुके थे, अतः उनका समय ६०० ई.पू. माना जा सकता है। सूत्रों से २०० वर्ष पहले अर्थात ८०० ई.पू. समय ब्राह्मणों का है,,इस समय तक ब्राह्मणों, आरध्यकों, और उपनिषदों की रचना हो जानी चाहिए उससे पहले २०० वर्षों का समय मन्त्रों का है, वेदों को दो भागों में विभक्त किया – छन्द और मन्त्र। मन्त्रों का विनियोग यज्ञों के अनुष्ठानों में किया जाता है तथा शेष छन्द हैं। मन्त्रों की रचना और विकास उससे भी २०० वर्ष पहले १२० ई.पू. में हुई थी। ऋग्वेद में प्राचीनतम और छन्द तथा मन्त्र हैं। अतः ऋग्वेद का समय १२०० ई.पू. का हो सकता है। विल्सन, कीथ, कॉल ब्रुक आदि विद्वानों ने ऋग्वेद की रचना के समय के सम्बन्ध में मैक्समूलर का समर्थन किया।

मॅकडॉनल का मत –

मॅकडॉनल ने ऋग्वेद का रचना काल १३०० ई.पू. प्रतिपादित किया है। उसका विचार है कि आर्यों की भारतीय और ईरानी शाखाएँ, जो पहले एक ही थीं, १३०० ई.पू. के लगभग पृथक हुई थीं। इसी समय आर्यों की भारतीय शाखा द्वारा ऋग्वेद की रचना हुई। मेकडॉनल का कहना है कि जैकोषी के अनुसार यदि आर्यों की भारतीय और ईरानी शाखाओं के पृथक् होने के समय को ४५०० ई.पू. भी मान लिया जाये, तो भी ३००० वर्षोंतक इनकी भाषाएं अपरिवर्तित ही रही होगी। अतः ऋग्वेद का रचना काल १२०० ई.पू. का होना चाहिए।

भण्डारकर का मत –

भण्डारकर ने इतिहास के आधार पर वेदों की रचना के समय को प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया। ऋग्वेद में देवों और असुरों के संग्राम का उल्लेख है असीरिया (मेसोपीटामिया) के लोग ही वेदों में उल्लिखित असुर हैं। ये २५०० ई.पू. के लगभग भारत की ओर आये थे। अतः यजुर्वेद की रचना २५०० ई.पू. के लगभग पूरी हुई होगी। ऋग्वेद इससे भी पहले रचा गया होगा। ऋग्वेद की रचना का समय ६०० ई.पू. रहा होगा।

जैकोबी का मत –

जैकोबी महोदय ने ज्योतिष के आधार पर गणना करके ऋग्वेद का समय ४५०० ई.पू. सिद्ध किया है। उनका कहना है कि कल्पसूत्रों में विवाह के प्रकरण में 'ध्रुव् हेव स्थिराभव' वाक्य आया है। इसका अभिप्राय है कि ध्रुवतारा उस समय अधिक चमकीला और स्थिर रहा होगा। यह स्थिति २६०० ई.पू. की हो सकती है। ब्राह्मण ग्रन्थों में कृत्तिका नक्षत्र में वसन्त समाप्त का उल्लेख है। गणना द्वारा यह समय २५०० ई.पू. का प्रतीत होता है। इस प्रकार ब्राह्मण ग्रंथों और कल्पसूत्रों का समय २६००-२५०० ई.पू. के लगभग रहा। ऋग्वेद का समय और भी बहुत पहले ४५०० ई.पू. होना चाहिए।

हांग का मत –

ज्योतिष के ही आधार पर हांग ने वेदांग ज्योतिष की रचना का समय ११८६ ई.पू. निर्धारित करके ब्राह्मण ग्रंथों का रचना काल १४००-१२०० ई.पू. निश्चित किया। उनके अनुसार वैदिक संहिताएं २०००-१४०० ई.पू. में निबद्ध हुई। तथा मन्त्रों की रचना का समय ३५८० ई.पू. का प्रतिपादित किया।

तिलक का मत –

ज्योतिष के आधार पर वेदों के समय को निधारित करने में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने महत्वपूर्ण भाग लिया है। उनके अनुसार संहिताओं का निबन्धन ४५०० ई.पू. में हुआ था। उससे पहले २००० वर्षों में सारे मन्त्र रचे गये। इस प्रकार प्राचीनतम ऋचाएं ६५०० ई.पू. तक ही हो सकती हैं। तिलक का कहना है कि ब्राह्मण ग्रंथों के समय में नक्षत्रों की गणना कृत्तिका नक्षत्र से होती थी तथा कृत्तिका नक्षत्र के समय दिन और रात बराबर होते थे। वर्तमान समय में २१ मार्च और २३ सितम्बर को दिन और रात बराबर होते हैं और सूर्य उस समय अश्विनी नक्षत्र में रहता है। इतना परिवर्तन ४५०० वर्षों में हो सकता है। अतः ब्राह्मण ग्रंथों की रचना २५०० वर्ष पूर्व हुई होगी। संहिताओं के युग में दिन और रात बराबर होते थे जब सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में होता था। यह समय ६५०० वर्ष पहले

का है। अतः संहिताओं की रचना काल ४५०० वर्ष ई.पू. का है। ऋग्वेद के मन्त्रों के अनुसार मृगशिरा नक्षत्र में वसन्त ऋतु होती थी। और दिन रात बराबर होते थे। यह समय और भी २०० वर्ष ई.पू. का रहा होगा। अतः ऋग्वेद के मन्त्रों का रचना काल ६५०० का है।

अनेक विद्वानों की यह मान्यता है कि ऋग्वेद की रचना यद्यपि सबसे प्राचीन है, तथापि यह वेद भी एकही समय में नहीं रचा गया। ऋग्वेद के कुछ सूक्त अधिक प्राचीन हैं। और कुछ बाद में रचे गये थे। वेद मन्त्रों की रचना की एक परम्परा रही और इनकी रचना क्रमशः होती रही। कालान्तर में इनका संकलन होता रहा। ऋग्वेद की एवं अन्य वेदों की रचना के समय को ठीक ठीक निर्धारित करना प्रायः असंभव सा ही है। परन्तु यह निश्चित है कि वेद संसार का सबसे प्राचीन साहित्य है। भारतीय विचारक वेदों को नित्य, अपौरुषेय, और ईश्वर कृत मानकर इनके समय के सम्बंध में विचार नहीं करते। इसलिए वेदों के काल निर्धारण की ओर अधिक ध्यान न देकर इनके प्रतिपाद्य विषयों और उपदेशों पर भी अधिक ध्यान देना उचित है।

• **श्री. हरी गोपाल शर्मा.**